ISWK SHARING KNOWLEDGE

कक्षा-10

पर्वत प्रदेश में पावस

SuccessCDs

- के.नौशाद फैरोज़

©ISWK

CBSE - 10
पर्वत प्रदेश में पावस
सुमित्रानंदन पंत

(1900-1977)

जन्म- 20 मई 1900, उत्तराखंड...

सात साल की उम्र में काव्य पाठ के लिए पुरस्कृत...
कविताओं में प्रकृति प्रेम की झलक...
आकाशवाणी के परामर्शदाता रहे...
1961 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया...
अन्य पुरस्कार – साहित्य अकादमी , ज्ञानपीठ
प्रमुख कृतियाँ – वीणा , पल्लव , युगवाणी, स्वर्णकिरण आदि
उपमा ,रूपक , अनुप्रास और मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग

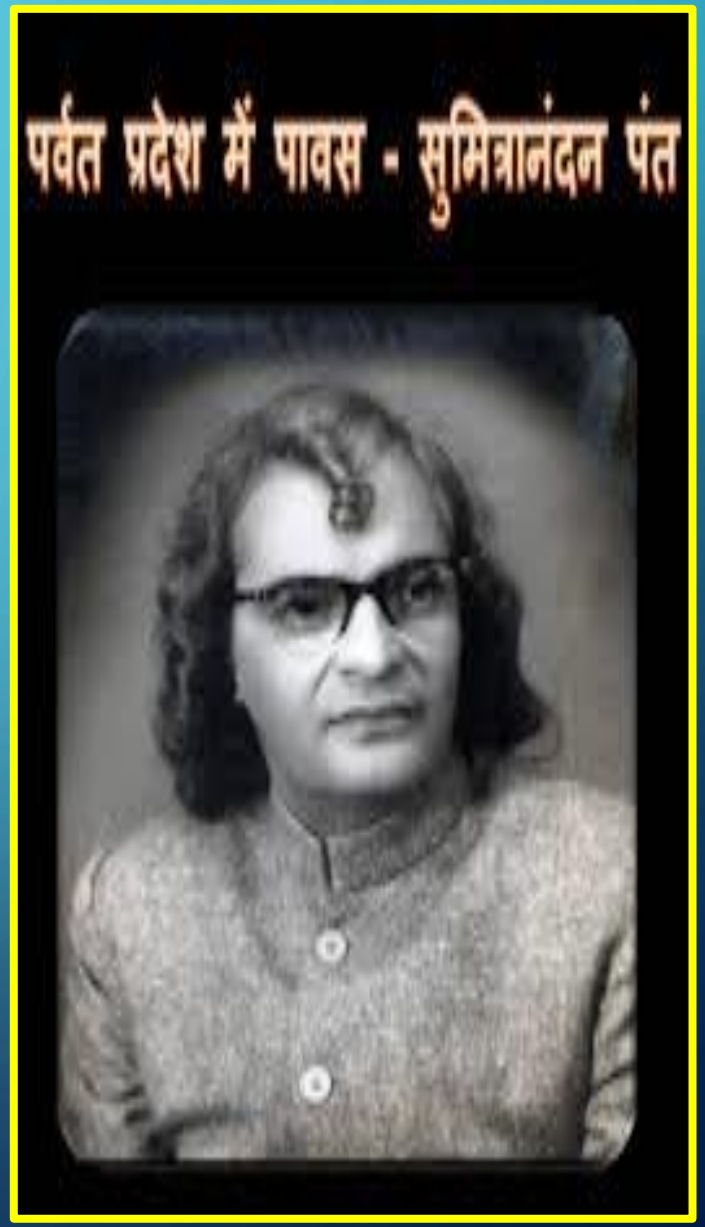

प्रस्तुत कविता प्रकृति के रोमांचक सौंदर्य को अपनी आँखों से निरखने की अनुभूति देती है। ऐसा लगता है मानो हम किसी ऐसे रम्य स्थल पर आ पहुँचे हैं;जहाँ पहाडों की अपार पंक्तियाँ हैं,आसपास झरने बह रहे हैं और सब कुछ भूलकर हम उसी में लीन रहना चाहते हैं।
कवि कक्षा में बैठे-बैठे ही पर्वतीय अंचल में विचरण करने की अनुभूति दे जाता है।

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।

पावस – वर्षा
पल –पल– क्षण–क्षण
परिवर्तित – बदला हुआ
प्रकृति वेश – प्रकृति का रूप

मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फ़ाड़,
अवलोक रहा है बार –बार
नीचे जल में निज महाकार

_जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फ़ैला है विशाल!

मेखलाकार – करघनी के आकार की पहाड़ की ढाल
अपार – विशाल
सहस्रों – हज़ारों
दृग –सुमन – पुष्प रुपी आँखें
अवलोक – देख
महाकार – विशाल आकार
ताल – तालाब
दर्पण – आईना

ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की तलहटी में
दर्पण के समान साफ़ जल का
एक बड़ा-सा तालाब है जिसमें
पहाड़ों की परछाई पड़ रही है।
लगता है मानो पहाड़ अपने
फ़ूलों के समान आँखों से अपना
विशाल आकार निहार रहा है।

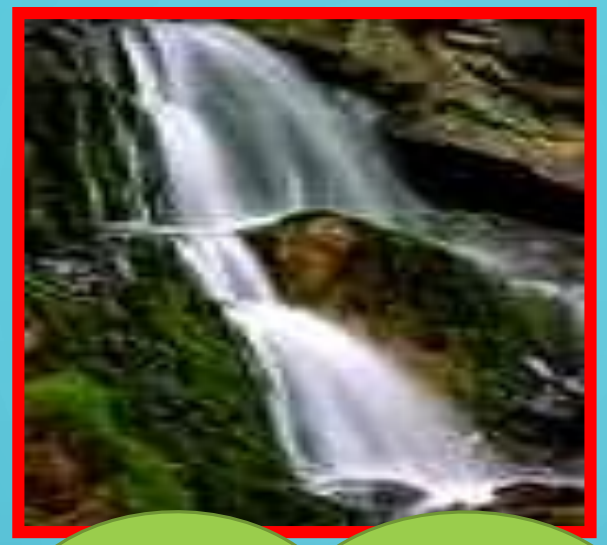

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!

गिरि – पर्वत
गौरव – महिमा
मद – मस्ती
नस –नस – रग-रग
उत्तेजित – भड़काया हुआ
लड़ी – माला
झाग – फेन
निर्झर- झरना

पहाड़ों से तीव्र वेग से
झाग बनाती हुई
मोतियों की लड़ियों-सी
सुन्दर जलधारा झर-
झर करती हुई बह रही
है।

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष,अटल,कुछ चिंतापर।

उर – हृदय
उच्चाकांक्षा – ऊँचा उठने की कामना
तरुवर – पेड़
नीरव नभ – शांत आकाश
अनिमेष – एकटक
चिंतापर- चिंतित

पहाड़ों पर उगे ऊँचे-लम्बे पेड़ आकाश को छू लेने की इच्छा प्रकट करते हुए शांत आकाश की ओर कुछ चिंतित एवं स्थिर भाव से देख रहे हैं।

उड़ गया अचानक लो, भूधर
फ़ड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अम्बर!

भूधर – पहाड़
पारद के पर – पारे के समान धवल एवं चमकीले पंख
रव –शेष – केवल आवाज़ का रह जाना

अचानक धुएँ के समान बादलों के छा जाने से पहाड़ अदृश्य हो गया। ऐसा लगता था मानो पहाड़ पक्षी बनकर अपने सफ़ेद पंख फ़ड़फ़ड़ाता हुआ कहीं उड़ गया हो। झरनों की केवल आवाज ही सुनाई दे रही थी और धरती तथा आकाश मिलते हुए से प्रतीत हो रहे थे।

•धँस गए धरा में सभय शाल!
•उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
•_यों जलद यान में विचर-विचर
•था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

सभय- भय के साथ
शाल – sal tree
ताल – तालाब
जलद-यान – बादल रुपी विमान
विचर – घूम
इंद्रजाल – जादूगरी

धुएँ की तरह बादलों से ऐसा भ्रम हो रहा था कि तालाब में आग लग गई है और जल जाने के भय से पेड़ धरती में धँस गए हैं। इस तरह बादल रुपी यान पर घूम-घूमकर इन्द्र अपनी जादूगरी दिखा रहा था।

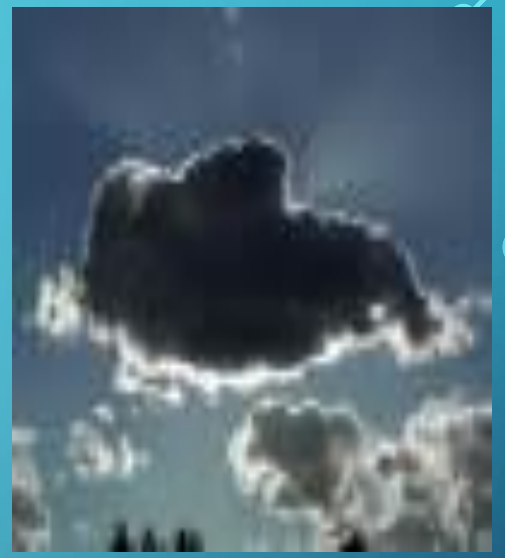

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

१.'मेखलाकार'-शब्द का क्या अर्थ है ?
२.'सहस्र दृग –सुमन' से क्या तात्पर्य है ?
३.कवि ने तालाब की तुलना किससे की है और क्यों ?
४. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए ?
५.झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं ? बहते हुए झरने की तुलना किससे की है ?

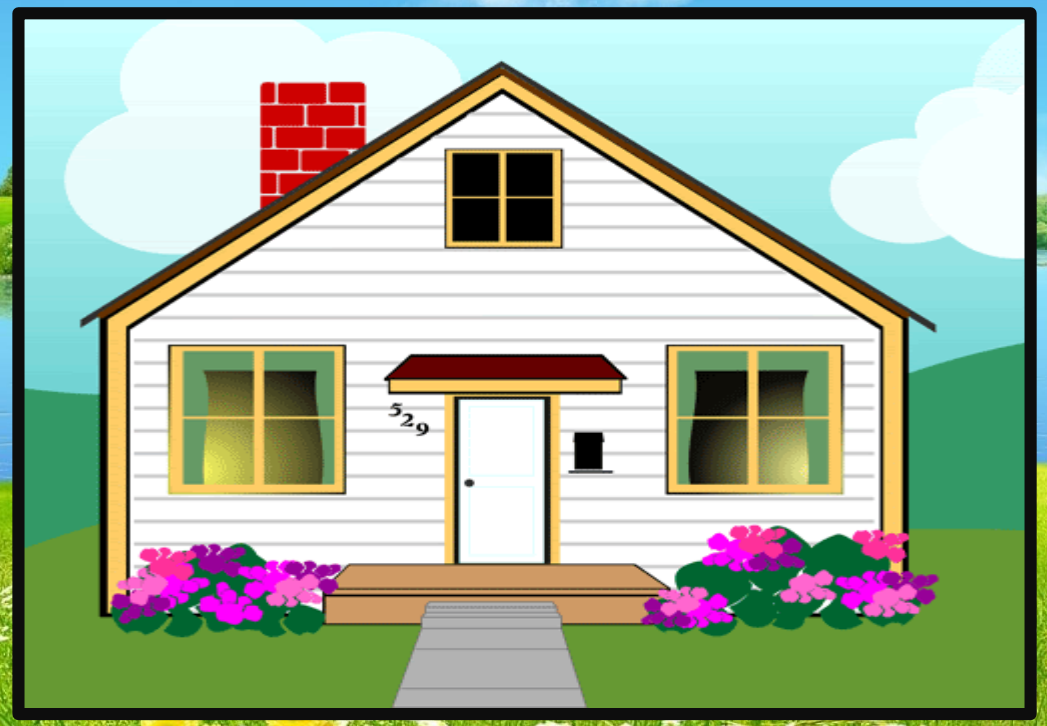

धन्यवाद

घर में रहिए,

सुरक्षित रहिए

और

स्वस्थ रहिए ।